SAMVAD E - JOURNAL
ISSN (Online) :2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 4, Issue-1, January to March : 2026
Published by Rangmati Publication http://www.rangmatipublication.com/

"भारतीय ज्ञान प्रणाली और आधुनिक शिक्षा (NEP 2020) : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

डॉ.विष्णुभाई मेराभाई जोगराणा
मददनीश प्राध्यापक
सरकारी विनयन एवं वाणिज्य कॉलेज, घोघा.
जिला – भावनगर. गुजरात.

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को आधुनिक शिक्षा के संदर्भ मे व्याख्यायित एवं विश्लेषित करने का प्रयास मात्र हैं। इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा को New Education policy : 2020 के रूप में प्रस्थापित किया गया हैं। नई शिक्षा नीति वैश्विक भूमंडलीकरण एवं तकनीकि आयामों को केंद्र में रखते हुए भारत के विकास के लिए निव का पत्थर साबित होगी। इसी विषय के आधार पर भारतीय प्रणाली को आधुनिक शिक्षा में केंद्रस्थ रखकर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया हैं। प्रस्तुत विषय का यह अध्ययन इस लिए महत्वपूर्ण हो जाता है कि, भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System – IKS) भारत की प्राचीन, समृद्ध और बहुआयामी बौद्धिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है। इसमें दर्शन, शिक्षा, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, पर्यावरण, कला, भाषा और सामाजिक जीवन से संबंधित ज्ञान निहित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति : 2020, भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक ऐतिहासिक परिवर्तन का संकेत देती है, जिसमें भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के साथ समन्वित करने पर विशेष बल दिया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में NEP 2020 के अंतर्गत IKS के समावेशन की अवधारणा, उद्देश्य, रणनीतियाँ, संभावनाएँ तथा उससे जुड़े प्रमुख मुद्दों और चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन इस बात को स्पष्ट करता है कि IKS का एकीकरण न केवल सांस्कृतिक पुनर्जागरण का माध्यम है, बल्कि यह आधुनिक शिक्षा को अधिक समग्र, मूल्य-आधारित और आत्मनिर्भर बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। अतः इस शोध पत्र का अध्ययन केवल प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में प्रस्तुत करने तक ही सीमित रखा गया हैं।

मुख्य शब्द (Keywords): भारतीय ज्ञान प्रणाली, आधुनिक शिक्षा, IKS, NEP 2020, पाठ्यक्रम, मूल्य-आधारित शिक्षा, विश्लेषण, अध्ययन।

1. भूमिका

भारतीय शिक्षा प्रणाली का इतिहास अत्यंत प्राचीन और गौरवशाली रहा है। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला एवं वल्लभी विद्यापीठ जैसे विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान परंपरा के जीवंत उदाहरण हैं। उस समय भारत ज्ञान राशि का विश्वकोश बन चुका था। विश्व के कौने–कौने से लोग अभ्यास के लिए भारत की प्राचीन विद्यापीठों मे शिक्षा ग्रहण करते थे। खगोलीय-शास्त्र, ज्योतिष-शास्त्र, गणितिक-विज्ञान, तत्वज्ञान, भूगोल, समाज-

दर्शन, अर्थशास्त्र, राजनीति-शास्त्र, धर्मशास्त्र आदि विषय ज्ञान के उत्कृष्ठ शिखर पर अपने तेज की ध्वजा लहरा रहे थे। प्राचीन भारत की समृद्धि, राजनैतिक विरासत, सांस्कृतिक धरोहर और सामाजिक संरचना आदि के माध्यम से भारत को पूरे विश्व में स्वर्णिम भारत के रूप में पहचान प्राप्त हुई थी। प्राचीन शिक्षा प्रणाली से ही पूरे विश्व में भारत सोने की चिड़िया के रूप मे जाना जाता था। किन्तु बाहरी आक्रांता, आपसी वैर मनस्य, स्वार्थलिपसा एवं कामवासना तथा जाति-पाती के मानवीय भेदभाव आदि से हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा क्षीण होती गयी और औपनिवेशिक काल में भारतीय शिक्षा व्यवस्था पश्चिमी मॉडल से अत्यधिक प्रभावित हुई, जिसके परिणाम स्वरूप स्वदेशी ज्ञान परंपराएँ हाशिए पर चली गईं। स्वतंत्रता के बाद भी शिक्षा प्रणाली में भारतीय दृष्टिकोण का अपेक्षित समावेश नहीं हो पाया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस स्थिति को बदलने का एक गंभीर प्रयास है। यह नीति शिक्षा को भारतीय मूल्यों, परंपराओं और ज्ञान प्रणाली से जोड़ने पर बल देती है। इसी संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली का आधुनिक शिक्षा के साथ एकीकरण अत्यंत प्रासंगिक विषय बन गया है।

2. भारतीय ज्ञान प्रणाली की अवधारणा

प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System – IKS) की अवधारणा अत्यंत व्यापक, समन्वयात्मक और जीवन-केंद्रित है। यह केवल शास्त्रीय ज्ञान का संग्रह नहीं, बल्कि मानव जीवन, प्रकृति और ब्रह्मांड के बीच संतुलन स्थापित करने वाली समग्र दृष्टि है। प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली से आशय उस ज्ञान परंपरा से है, जो भारत में हजारों वर्षों से विकसित हुई और जिसका मूल स्रोत वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, स्मृतियाँ, पुराण, दर्शन, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष आदि रहे हैं। यह ज्ञान केवल धार्मिक नहीं, बल्कि दार्शनिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, चिकित्सा, गणितीय और नैतिक आयामों को समाहित करता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल धार्मिक या आध्यात्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के सभी क्षेत्रों को समाहित करती है। इसमें वेद, उपनिषद, दर्शन, आयुर्वेद, योग, खगोलशास्त्र, गणित, स्थापत्य, पर्यावरणीय ज्ञान, लोकज्ञान और हस्तशिल्प जैसी विविध परंपराएँ सम्मिलित हैं। IKS का मूल उद्देश्य ज्ञान को जीवनोपयोगी बनाना, नैतिक मूल्यों का विकास करना और समाज में संतुलन स्थापित करना रहा है। यह प्रणाली गुरु-शिष्य परंपरा, संवाद, अनुभव और आत्मचिंतन पर आधारित रही है। आज की शिक्षा नीति जैसे National Education Policy 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान से जोड़ा जा सके।

3. आधुनिक शिक्षा की विशेषताएँ

आधुनिक भारतीय शिक्षा नीति – *National Education Policy (NEP) 2020* भारत की शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण पुनर्निर्माण है। इसका उद्देश्य शिक्षा को समग्र, लचीला, समावेशी और भविष्य-उन्मुख बनाना है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ सरल एवं स्पष्ट रूप में दी गई हैं - आधुनिक शिक्षा प्रणाली वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तकनीकी दक्षता, व्यावसायिक कौशल और वैश्विक प्रतिस्पर्धा पर केंद्रित है। इस प्रणाली ने समाज को तकनीकी रूप से सशक्त बनाया है। आज की शिक्षा प्रणाली में ज्ञान को रोजगार से जोड़ने पर अत्यधिक बल है, जबकि मानवीय मूल्यों और नैतिक शिक्षा को अपेक्षित महत्व नहीं मिल पा रहा है। यही वह बिंदु है जहाँ भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। शिक्षा केवल बोर्ड परीक्षा उत्तीर्ण करना नहीं, बल्कि **समग्र व्यक्तित्व विकास** – *ज्ञान, कौशल, मूल्यों और मानवीय सद्गुणों* – पर ध्यान देती है। बहु-स्तरीय और लचीला पाठ्यक्रम, शिक्षा की एकीकृत संरचना, मातृभाषा/स्थानिय भाषा में पढ़ाई, आकलन-परीक्षा प्रणाली में सुधार, तकनीक-आधारित शिक्षा, शिक्षक विकास और प्रशिक्षण, जीविकोपयोगी कौशल, उच्च शिक्षा में सुधार, समावेशी शिक्षा, भारत की संस्कृति और ज्ञान परंपरा, शिक्षा–प्रौद्योगिकी पर केंद्र सरकार और राज्य सरकार का समनवय आदि पहलुओं के माध्यम से भारत के पुनर-नवनिर्माण हेतु आधुनिक भारतीय शिक्षा एवं प्राचीन ज्ञान प्रणाली का समन्वय अनिवार्य है।

4. NEP 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) का स्थान

National Education Policy 2020 में *भारतीय प्राचीन ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System – IKS)* को शिक्षा के मूल दर्शन और पाठ्यचर्या के महत्वपूर्ण घटक के रूप में स्थान दिया गया है। इसका उद्देश्य परंपरा और आधुनिकता के समन्वय के माध्यम से ज्ञान की समग्र दृष्टि विकसित करना है। NEP 2020 स्पष्ट रूप से भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने की अनुशंसा करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसारः

- पाठ्यक्रम में भारतीय इतिहास, दर्शन, विज्ञान और संस्कृति का समावेश किया जाएगा।
- बहुभाषिक शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाएगा, विशेष रूप से मातृभाषा और भारतीय भाषाओं में।
- योग, आयुर्वेद, पारंपरिक कला और शिल्प को शिक्षा से जोड़ा जाएगा।
- अनुसंधान और नवाचार को भारतीय संदर्भों से जोड़ा जाएगा।
- यह नीति शिक्षा को जड़ों से जोड़ते हुए आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने का प्रयास करती है।

5. भारतीय ज्ञान प्रणाली और आधुनिक शिक्षा का समन्वय

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) और आधुनिक शिक्षा का समन्वय आज के समय की एक महत्वपूर्ण शैक्षिक आवश्यकता है। इसका उद्देश्य परंपरागत ज्ञान की गहराई को आधुनिक विज्ञान, तकनीक और वैश्विक दृष्टिकोण के साथ जोड़ना है, ताकि शिक्षा अधिक समग्र, मूल्य-आधारित और व्यवहारिक बन सके। IKS और आधुनिक शिक्षा का समन्वय एक द्विपक्षीय प्रक्रिया है। जहाँ आधुनिक शिक्षा वैज्ञानिकता और तकनीकी दक्षता प्रदान करती है, वहीं IKS मूल्यबोध, समग्र दृष्टि और सामाजिक उत्तरदायित्व को सुदृढ़ करती है। उदाहरण के लिए, योग और ध्यान को आधुनिक मनोविज्ञान और स्वास्थ्य विज्ञान से जोड़ा जा सकता है। आयुर्वेद को आधुनिक चिकित्सा अनुसंधान के साथ समन्वित किया जा सकता है। इसी प्रकार, पर्यावरणीय संकट के समाधान में भारतीय पर्यावरणीय ज्ञान अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। समन्वय की आवश्यकता, दार्शनिक आधार, समन्वय के प्रमुख क्षेत्र, शोध और नवाचार, मूल्य-आधारित शिक्षा एवं संभवित चुनौतियाँ आदि पहलुओं के आधार पर भारतीय ज्ञान प्रणाली और आधुनिक शिक्षा का समन्वय किया जा सकता है। किन्तु इसके अतिरिक्त भारतीय ज्ञान प्रणाली और आधुनिक शिक्षा के समन्वय में कुछ अवरोधक चुनौतियाँ भी है जिसे समझ कर उसके योग्य उपा खोज आवश्यक है।

6. भारतीय ज्ञान प्रणाली और आधुनिक शिक्षा : प्रमुख चुनौतियाँ

भारतीय ज्ञान प्रणाली के शैक्षिक एकीकरण में कई चुनौतियाँ सामने आती हैंः

6.1 पाठ्यक्रम निर्माण की चुनौतीः IKS को पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए प्रामाणिक, वैज्ञानिक और संतुलित सामग्री का चयन एक बड़ी चुनौती है।

6.2 प्रशिक्षित शिक्षकों की कमीः IKS और आधुनिक विषयों दोनों में दक्ष शिक्षकों का अभाव है, जिससे प्रभावी शिक्षण में बाधा उत्पन्न होती है।

6.3 पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण का टकरावः कई बार IKS को अवैज्ञानिक या पिछड़ा हुआ मान लिया जाता है, जिससे इसके समावेशन में वैचारिक विरोध उत्पन्न होता है।

6.4 भाषायी समस्याः अधिकांश IKS ग्रंथ संस्कृत, प्राकृत या क्षेत्रीय भाषाओं में हैं, जिनकी आधुनिक संदर्भों में व्याख्या कठिन है।

6.5 मूल्यांकन प्रणालीः IKS आधारित शिक्षा के लिए उपयुक्त मूल्यांकन पद्धतियों का अभाव एक गंभीर मुद्दा है।

7. भारतीय ज्ञान प्रणाली और आधुनिक शिक्षा : संभावनाएँ और समाधान

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) और आधुनिक शिक्षा : संभावनाएँ और समाधान वर्तमान शैक्षिक विमर्श का अत्यंत प्रासंगिक विषय है। आज जब शिक्षा वैश्विक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी विकास और मूल्य-संकट से जूझ रही है,

तब भारतीय ज्ञान परंपरा एक संतुलित और मानवीय दृष्टिकोण प्रदान करती है। इन चुनौतियों के बावजूद IKS के एकीकरण की व्यापक संभावनाएँ हैं:

7.1 अंतरविषयक (Interdisciplinary) अध्ययन को प्रोत्साहनः **अंतरविषयक (Interdisciplinary) अध्ययन** वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था की एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। 21वीं सदी की जटिल समस्याएँ—जैसे पर्यावरण संकट, तकनीकी परिवर्तन, सामाजिक असमानता—एक ही विषय के दायरे में हल नहीं हो सकतीं। इसी कारण University Grants Commission और Ministry of Education द्वारा लागू National Education Policy 2020 में अंतरविषयक अध्ययन को विशेष महत्व दिया गया है।

7.1.1 अंतरविषयक अध्ययन की अवधारणाः अंतरविषयक अध्ययन (Interdisciplinary Study) वह शैक्षिक एवं शोध-पद्धति है जिसमें दो या दो से अधिक विषयों के सिद्धांतों, विधियों और दृष्टिकोणों को समन्वित कर किसी समस्या, विषय या अवधारणा का समग्र अध्ययन किया जाता है। यह पारंपरिक एक-विषयी (Single Discipline) सीमाओं से आगे बढ़कर ज्ञान के विभिन्न आयामों को जोड़ने का प्रयास करता है। अंतरविषयक अध्ययन का मूल उद्देश्य ज्ञान को खंडित रूप में न देखकर समग्र रूप में समझना है। उदाहरण के लिए - पर्यावरणीय समस्याओं के अध्ययन में **भूगोल, जीवविज्ञान, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र** का संयुक्त योगदान आवश्यक होता है। साहित्य और मनोविज्ञान का समन्वय मानव व्यवहार और संवेदनाओं को गहराई से समझने में सहायक होता है। इस प्रकार यह अध्ययन पद्धति विषयों के बीच अंतःसंबंध स्थापित करती है।

7.1.2 अंतरविषयक अध्ययन की आवश्यकताः अंतरविषयक अध्ययन (Interdisciplinary Study) वह पद्धति है जिसमें दो या अधिक विषयों के ज्ञान, सिद्धांतों और विधियों को एक साथ जोड़कर किसी समस्या या विषय का समग्र अध्ययन किया जाता है। वर्तमान वैश्विक और जटिल परिवेश में यह दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक हो गया है। इसकी आवश्यकता निम्न बिंदुओं से स्पष्ट होती है।

आज की समस्याएँ—जैसे जलवायु परिवर्तन, वैश्विक स्वास्थ्य संकट, तकनीकी नैतिकता आदि केवल एक विषय के माध्यम से हल नहीं की जा सकतीं। उदाहरण के लिए, कोविड-19 महामारी के दौरान चिकित्सा विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और तकनीकी अध्ययन सभी की संयुक्त भूमिका रही। अंतरविषयक अध्ययन से विद्यार्थी केवल तथ्यों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे विषयों के पारस्परिक संबंधों को समझते हैं। यह दृष्टिकोण ज्ञान को अधिक व्यापक और गहन बनाता है। जब विभिन्न विषयों के विचार मिलते हैं, तो नए समाधान और नवाचार जन्म लेते हैं। उदाहरणस्वरूप, Design Thinking जैसी अवधारणाएँ कला, प्रबंधन और तकनीक के समन्वय से विकसित हुईं, जो आज उद्योग और शिक्षा में व्यापक रूप से उपयोग की जाती हैं।

आधुनिक रोजगार क्षेत्र बहु-कौशल (multi-skill) की मांग करता है। सूचना प्रौद्योगिकी, डेटा विश्लेषण, संचार कौशल और सामाजिक समझ, इन सभी का समन्वय आवश्यक है। नई शिक्षा नीति National Education Policy 2020 भी बहुविषयक (multidisciplinary) शिक्षा पर बल देती है। अंतरविषयक दृष्टिकोण छात्रों में विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक सोच विकसित करता है। वे किसी भी विषय को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने और तर्कसंगत निष्कर्ष निकालने में सक्षम होते हैं। विभिन्न विषयों के समन्वय से सामाजिक और सांस्कृतिक विविधताओं को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। इतिहास, साहित्य और समाजशास्त्र के संयुक्त अध्ययन से समाज की संरचना और परिवर्तन की प्रक्रिया स्पष्ट होती है।

7.1.3 अंतरविषयक अध्ययन को प्रोत्साहित करने की रणनीतियाँः अंतरविषयक अध्ययन (Interdisciplinary Study) को प्रभावी रूप से बढ़ावा देने के लिए शैक्षणिक संस्थानों, शिक्षकों, नीति-निर्माताओं और शोध संस्थाओं को समन्वित प्रयास करने की आवश्यकता है। निम्नलिखित प्रमुख रणनीतियाँ इस दिशा में सहायक हो सकती है। जैसे मल्टीपल एंट्री-एग्जिट सिस्टम, मेजर–माइनर विषय व्यवस्था, क्रेडिट ट्रांसफर प्रणाली बहुविषयक

विश्वविद्यालयों की स्थापना, विभिन्न विभागों के संयुक्त शोध-परियोजनाएँ, शोध एवं नवाचार को बढ़ावा, अंतरविषयक रिसर्च सेंटर, उद्योग–अकादमिक सहयोग, शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षकों के लिए बहुविषयक कार्यशालाएँ, संयुक्त शिक्षण (Team Teaching) की व्यवस्था, डिजिटल और तकनीकी संसाधनों का उपयोग, ऑनलाइन कोर्स प्लेटफॉर्म, वर्चुअल लैब और डिजिटल लाइब्रेरी

7.1.4 शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में IKS को शामिल करना: **शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में IKS (Indian Knowledge Systems) को शामिल करना** आज की शिक्षा-व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। National Education Policy 2020 में स्पष्ट रूप से भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर समाहित करने की बात कही गई है। इसके सफल क्रियान्वयन के लिए शिक्षक प्रशिक्षण (Teacher Education) सबसे प्रमुख आधार है।

7.1.5 डिजिटल माध्यमों द्वारा प्राचीन ग्रंथों का अनुवाद और प्रसार: **डिजिटल माध्यमों द्वारा प्राचीन ग्रंथों का अनुवाद और प्रसार** आज के ज्ञान-समाज में सांस्कृतिक संरक्षण और वैश्विक संवाद का अत्यंत प्रभावी माध्यम बन चुका है। भारतीय परंपरा के अनेक ग्रंथ—जैसे ऋग्वेद, उपनिषद, महाभारत और रामायण—सदियों तक मौखिक और पांडुलिपि परंपरा में सुरक्षित रहे। अब डिजिटल तकनीक इनके संरक्षण, अनुवाद और वैश्विक प्रसार को नई दिशा दे रही है।

7.1.6 शोध और नवाचार को बढ़ावा देना: **शोध और नवाचार को बढ़ावा देना** किसी भी राष्ट्र की प्रगति, आत्मनिर्भरता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए अत्यंत आवश्यक है। 21वीं सदी ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था (Knowledge Economy) की सदी है, जहाँ वैज्ञानिक अनुसंधान, तकनीकी विकास और रचनात्मक नवाचार राष्ट्र निर्माण के प्रमुख आधार हैं। भारत में National Education Policy 2020 ने शोध और नवाचार को शिक्षा-प्रणाली के केंद्र में स्थापित किया है।

8. निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) और National Education Policy 2020 **का समन्वय का उद्देश्य** भारतीय शिक्षा को ऐसी दिशा देना है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का संतुलित मेल हो। इसका लक्ष्य केवल अतीत की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि उसे समकालीन संदर्भ में सार्थक रूप से पुनर्स्थापित करना है। भारतीय ज्ञान प्रणाली और आधुनिक शिक्षा का समन्वय भारत की शिक्षा व्यवस्था को अधिक समग्र, मूल्य-आधारित और आत्मनिर्भर बना सकता है। NEP 2020 इस दिशा में एक सशक्त प्रयास है, किंतु इसके सफल क्रियान्वयन के लिए नीतिगत प्रतिबद्धता, अकादमिक गंभीरता और सामाजिक सहयोग आवश्यक है। यदि IKS को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ आधुनिक शिक्षा में समाहित किया जाए, तो यह न केवल भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का माध्यम बनेगा, बल्कि वैश्विक शिक्षा में भी भारत की विशिष्ट पहचान स्थापित करेगा। भारतीय ज्ञान प्रणाली और आधुनिक शिक्षा (NEP 2020) का समनवय ही भारत को अपनी प्राचीन गरिमा एवं गौरव प्रदान कर सकता है।

संदर्भ सूची :

- गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मिनिस्टरि ऑफ एज्यूकेशन, 2020.
- शर्मा रामनाथ, मोतीलाल बनारसी दास, भारतीय तत्वज्ञान, 2001.
- मुखर्जी, राधा कुमुद, प्राचीन भारतीय शिक्षा, 2021.
- नैयर आर., इंडियन नॉलेज सिस्टम एंड हायर एज्यूकेशन, पियर्सन, 2021.
- UNESCO. Education for Sustainable Development. UNESCO Publishing, 2019.